टीकाकरण करने का तरीका :-

1. आँख या नाक ड्रापर विधि द्वारा :-

एक अच्छे ड्रापर की सहायता से 1 बूंद टीका मुर्गी की आँख या नाक में डालना चाहिए, एवं मुर्गी को हाथ से तब तक नहीं छोडना चाहिए जब तक की बूंद आँख या नाक के अंदर प्रवेश न कर जाये।

2. पीने के पानी की सहायता से टीकाकरण करना :-

1. टीकाकरण करने से पूर्व मुर्गीयों को 1.5 से 2.5 घण्टे प्यासा रखना चाहिए। इसके लिए 1.5 से 2.5 घण्टे पूर्व पीने के पानी के सारे बर्तन हटा देना चाहिए।
2. हटाये हुए पानी के सारे बर्तनों को अच्छे से धोकर सुखा लेना चाहिए।
3. पीने वाला पानी शुद्ध होना चाहिए एवं उसे टीका एवं दूध पावडर के अलावा किसी भी प्रकार की अन्य दवाई का उपयोग नही करना चाहिए।
4. 6 ग्राम दूध पावडर प्रति लीटर शुद्ध पानी के हिसाब से मिलाना चाहिए।
5. पानी को बर्फ से ठंडा करना चाहिए लेकिन बर्फ को सीधे पानी में नही मिलाना चाहिए। बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर पालीथिन में भर लेना चाहिए और बर्फ भरी पालीथिन को टीकाकरण वाले शुद्ध पानी में हिलाते रहना चाहिए ताकि पानी ठंडा हो जाये। जब पानी ठंडा हो जाये तब पालीथिन निकालकर अलग कर देना चाहिए। यदि बर्फ बोरिंग या कुंए के पानी का हो तो और कड़कनाथ पालक को पूरा विश्वास हो कि बर्फ में कोई दवा नहीं मिली है। तो ऐसी बर्फ का उपयोग टीकाकरण पानी में डालकर पानी को ठंडा करने में किया जा सकता है।
6. जब पानी ठंडा हो जाये तब टीके + डायलूएन्ट को दूधयुक्त पानी में मिलाना चाहिए।
7. अब तैयार टीके युक्त पानी को अधिक से अधिक बर्तनों में कम कम पानी की मात्रा में डालकर मुर्गीयों को पिलाना चाहिए। ध्यान रहे टीकायुक्त पानी पीये बगैर एक भी चूजा/ मुर्गी को नही रहना चाहिए। इससे बचने के लिए कमजोर व सुस्त चूजों को पकड़कर टीका युक्त पानी पिलाना चाहिए।
8. टीका युक्त पानी एक निश्चित मात्रा में लगाना चाहिए ताकि मुर्गीयां 1 घण्टे के आसपास पानी खत्म कर सकें।
9. टीकाकरण करने के लिए टीके युक्त पानी की मात्रा इस प्रकार होनी चाहिए
   1. 7 दिन की आयु के प्रति 1000 चूजों के लिए 7 लीटर
   2. 15 दिन की आयु के प्रति 1000 चूजों के लिए 15 लीटर
   3. 25 दिन की आयु के प्रति 1000 चूजों के लिए 25 लीटर

सावधानियाँ :-

1. टीकाकरण करने के लिए जो पानी उपयोग में लाया जाये वह ताजा, स्वच्छ तथा दवा रहित होना चाहिए।
2. पक्षियों को कम से कम 1-2 घण्टे प्यासे रखना चाहिए। प्यासे रखने के दौरान दाना आवश्यक रुप से डालना चाहिए, ताकि पानी की तड़प बनी रहे।
3. फेट (वसा) रहित (स्कीम्ड) दूध पावडर ही उपयोग करना चाहिए। सादे दूध का प्रयोग कतई नही करना चाहिए।
4. टीकाकरण हमेशा ठंडे पानी में करना चाहिए एवं ठंडे मौसम में करना चाहिए। टीकाकरण का उपयुक्त समय रात में या सबेरे धुप निकलने से पहले का समय होता है।
5. ध्यान रहे एक भी पक्षी बिना टीकाकरण के न हीं छुटना चाहिए अन्यथा टीकाकरण रहित पक्षी के

द्वारा वह बीमारी अन्य पक्षीयों में प्रवेश कर सकती है और उस बीमारी का प्रभाव मुर्गीघर में हमेशा बना रहेगा।

6. टीका खरीदते समय इसकी एक्सपाइर तिथि आवश्यक रुप से देख लेनी चाहिए।
7. यदि मुर्गो में काक्सीडियोसिस की बीमारी आ गई है तब इस समय हमें टीकाकरण नहीं करना चाहिए क्योंकि काक्सी टीकाकरण में अवरोध पैदा करती है।

अण्डादेय मुर्गीयों में डीविकिंग (चोंच कटाई)

अण्डादेय मुर्गीयों में डीविकिंग एक महत्वपूर्ण कार्य है। जिससे मुर्गीयों को सबसे अधिक तनाव पड़ता है। इस कार्य में यदि सावधानी नही बरतीय जाये तो उत्पादन क्षमता में बुरा प्रभाव पड सकता है।

ध्यान रखने योग्य बातें

1. चिंक डीविकिंगय या पहली डिविकिंग :- यह अण्डादेय चूजों में 7 दिन से लेकर चौथे सप्ताह के अन्दर कर देना चाहिए। यह अत्यधिक संवेदनशील होता है। इसमें चूजों को दोनों (उपर तथा नीचे) चोंचो को एक साथ मिलाकर काटा जाता है इस विधि में डीविकिंग मशीन की ब्लेड़ लाल होने पर ही चोंच काटना चाहिए ताकि चोंच काटने में शीघ्रता हो और चूजों को परेशानी न हो चोंच के कटते ही चोंच को गरम ब्लेड़ में घिसकर जला देना चाहिए ताकि डीविकिंग के बाद खून न निकलने पाए इस विधि में चूजों का सिर नीचे की ओर झुकाकर काटना चाहिए ताकि चोंच को सही आकार मिल सके। चोंच को कम से कम दो सेकेंड तक ब्लेड के संपर्क में रखते हुए उसकी घिसाई करनी चाहिए।

डीविकिंग के लिए चूजों को पकड़ते समय अंगुठा चूजें के सिर पर होना चाहिए चारों उंगलियां गर्दन के निचले भाग में होनी चाहिए डीविकिंग करते समय जीभ कटने की संभावना होती है इसलिए गर्दन के निचले भाग में साधारण दबाव देना चाहिए जिससे की जीभ अंदर की तरफ सुरक्षित आ सके।

2. फाइनल या आखिरी डीविकिंग :- यह 16 वें सप्ताह की आयु में करनी चाहिए। इस डीविकिंग में पक्षी को सबसे अधिक तनाव का समना करना पड़ता है। और यदि अच्छे से नहीं किया गया तो चोंच से अधिक खून बहने से पक्षी की मौत भी हो सकती है।

1. ब्लेड़ (लाल) गरम होना चाहिए। संभव हो तो नयी ब्लेड़ का इस्तेमाल करना चाहिए।
2. दोनों चोंचो को अलग-अलग करके काटना चाहिए।
3. चोंच को अग्रेजी के व्ही वर्णाकार में काटना चाहिए चोंच का निचला भाग उपरी भाग से लम्बा होना चाहिए।
4. डीविकिंग के लिए प्रयास करना चाहिए कि 16 वें सप्ताह में हो ही जाए, क्योंकि डीविकिंग का दिन पक्षियों के जीवनकाल का सबसे अधिक तनाव वाला दिन होता है ओर यदि 16 वें सप्ताह के बाद डीविकिंग करते हैं तो इसका गहरा असर अण्डों के उत्पादन पर पड़ता है अतः डीविकिंग उचित समय पर होना चाहिए।